संधर ऑटोमोटिव्स (भारत) के कुछ मजदूरों की ओर से

संधर ग्रुप के कई कारखाने भारत, पोलैंड, स्पेन और अन्य देशों में वाहनों के कल-पुर्जे बनाते हैं. मैनजमेंट हमारे शोषण को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर संयोजित कर रहा है, हमें भी उसके खिलाफ अपने संघर्ष को संगठित करना होगा.

चेन्नई के पास स्थित संधर फैक्ट्री से
इस कारखाने में 40 मजदूर काम करते हैं, जो प्रतिदिन रॉयल एनफील्ड के मोटरसाइकिलों के लिए 430 चक्कों के पुर्जे जोड़ते हैं. इस काम के लिए एम्-आर-एफ से टायर, बेम्ब्रो से ब्रेक और एक्सेल कंपनी से रिम आते हैं. यह काम थकाने वाला है - हर चक्के में 40 आरे, यानी एक शिफ्ट में 8600 आरे, लगाने होते हैं. कई मजदूर मेकैनिक के रूप में अप्रेंटिस रह चुके हैं, तब भी उन्हें दो सालों के लिए, अकुशल कारीगर को मिलने वाली न्यूनतम मजदूरी पर बतौर ट्रेनी रखा जाता है. शनीवार और रविवार को भी आएदिन काम करना पड़ता है.

पुणे के पास स्थित संधर फैक्ट्री से
पुणे के पास चकन में स्थित इस कारखाने में 35 मजदूर काम करते हैं. ये जेनरल मोटर्स के लिए दरवाजे के तालों को तैयार करते हैं -फिलहाल हर महीने 2500 ताले जोड़े जाते हैं. 2012 में 3000 ताले तैयार होते थे, तब से उत्पादन में कटौती हुई है. तकरीबन 20 मजदूरों की तब से छंटनी की गयी है, जो ठेकेदारों के मातहत काम कर रहे थे. कारखाने की दीवारें टिन की हैं, गर्मियों में अंदर का तापमान असहनीय हो जाता है.

दिल्ली के पास स्थित संधर के कारखानों से
गुड़गाँव के पास धूमासपुर की संधर फैक्ट्री में तक़रीबन 2000 मजदूर काम करते हैं. बगल में ही स्थित, कीरत प्लास्टिक्स, जहाँ 500 मजदूर कार्यरत हैं, संधर के लिए पुर्जे सप्लाई करती है. यहाँ मजदूर हीरो मोटरसाइकिल के लिए आइने, होंडा कारों के लिए कल-पुर्जे और मारूति सुज़की के लिए स्टीअरिंग-वील के पुर्जे बनाते हैं - इन खरीददार कंपनियों की फैक्ट्रियां भी पड़ोस में हैं. 2000 में से 1800 मजदूर दो अलग-अलग ठेकेदारों के ज़रिये बहाल किये गए हैं. उन्हें आठ घंटे के आधार पर 5500 रुपये की बेसिक मजदूरी मिलती है. ये बारह-बारह घंटे की दो शिफ्ट के तहत काम करते हैं, जो कि आयेदिन हीरो कंपनी की तरफ से मांग बढ़ने के कारण दो घंटे और बढ़ा दिया जाता है. 2007 से वर्कलोड (काम का भार) अत्यधिक बढ़ गया है. 2012 से कई आइने बनाने वाली असेम्बली-लाइनों पर 30 मजदूरों के जगह पर अब केवल 20 मजदूर कार्यरत हैं, जिसके कारण गुणात्मकता की समस्याओं के साथ-साथ मजदूरों को कमरतोड़ मेहनत करना पड़ रहा है. मानेसर और गुड़गाँव की फैक्ट्रियों में स्थिति बहुत अलग नहीं है. मानेसर में करीब 700 मजदूर काम करते हैं, जिसमे अधिकाँश ठेके पर हैं. गुड़गाँव कारखाने में सत्यम, ओमैक्स और अन्य मारूति सुज़की कि सप्लायर कंपनियों के लिए पुर्जे तैयार होते हैं. यहाँ मजदूरों में, विशेषकर नवजवानों, में अत्यधिक असंतोष है. जब ओवरटाइम के पैसे नहीं मिले तो कुछ मजदूरों ने 12 घंटे की शिफ्ट करने से इनकार कर दिया. कई मजदूर जल्दी ही काम छोड़ देते हैं, इस आशा में कि क्षेत्र की अन्य फैक्ट्रियों में स्थिति बेहतर होगी. कई दो महीनों के बाद संधर में लौट आते हैं, हालांकि इसलिए नहीं कि यहाँ स्थिति बेहतर है.

कई लोग कहते हैं कि कुछ हो नहीं सकता, **परन्तु अगर हम आसपास के औद्योगिक क्षेत्रों में मजदूरों के चहलपहल को देखें तो हमें समझ में आएगा कि कितना कुछ हो सकता है:**

<u>हीरो मोटरसाइकिल्स, गुड़गाँव, 2006</u>
4500 अनियमित मजदूरों ने अपने अनियमित दर्जे के उन्मूलन और नियमित करने के मांग को लेकर चार दिन के लिए फैक्ट्री पर कब्ज़ा जमाया. बाहर से उन्हें मामूली सहयोग मिला और प्रबंधन ने पहले पानी की सप्लाई बंद कर दी, फिर उन्हें कारखाने के बाहर के प्रतिनिधियों की टीम के ज़रिये वार्ता करने को कहा. खाली वायदों के साथ कब्ज़ा हटाया गया, हालांकि मजदूरी में बढ़ोतरी हुई.

<u>होंडा मोटरसाइकिल्स, गुड़गाँव, 2006</u>
ट्रेड-यूनियन के साथ समझौते के तहत जब अनियमित मजदूरों को कुछ नहीं मिला, तो कई सैकड़ों अनियमित मजदूरों ने कंपनी की कैंटीन पर कब्ज़ा कर लिया. बी-शिफ्ट के मजदूरों ने बाहर से सहयोग दिया. पांच दिनों तक मजदूर अंदर ही रहे. कंपनी रियायतें देने के लिए मजबूर हो गयी.

<u>डेल्फी, गुड़गाँव, 2007</u>
गुड़गाँव स्थित कार के पुर्जे बनाने वाली कंपनी डेल्फी की फैक्ट्री में 2500 अनियमित मजदूरों ने आकस्मिक हड़ताल करके मुख्य द्वार पर नाकेबंदी कर दी. कंपनी ने 250 नियमित मजदूरों की यूनियन को हड़ताली मजदूरों को वापस लाने को कहा और दो दिन के बाद नाकेबंदी हटी. 2007 अगस्त में, हाल में बढ़ी न्यूनतम मजदूरी के भुगतान की मांग को लेकर इन मजदूरों ने फिर एक बार बिना पूर्व सूचना के कुछ घंटों के लिए काम रोक दिया और इस बार उनकी जीत हुई.

हीरो मोटरसाइकिल्स, धरुहेरा, 2008
2008 मई में, परमानेंट मजदूरों के यूनियन द्वारा सदस्य न बनाने को लेकर, 2000 अनियमित मजदूरों ने हीरो होंडा धरुहेरा में आकस्मिक हड़ताल कर दिया और दो दिन तक प्लांट पर अपना कब्ज़ा बनाए रखा. मैनेजमेंट और परमानेंट वर्करों की यूनियन दोनों ने ही मजदूरों की स्थिति में सुधार के वायदे किये. अनियमित मजदूरों ने फिर अपनी यूनियन का पंजीकरण कराने कोशिश की. इस प्रक्रिया का अंत 2008 अक्टूबर में नेताओं के निलंबन और व्यापक लॉक-आउट (ताला बंदी) में हआ. धूमसपूर की संधर फैक्ट्री इस प्लांट को आइने सप्लाई करती है.

बोश, पुणे, 2009
मारूति सुज़की सहित कई कंपनियों को सप्लाई करने वाली बोश कंपनी के मजदूर ठेकेदारी प्रथा के उन्मूलन की मांग को लेकर एक लंबी हड़ताल पर गए. प्रबंधन ने हड़ताल को कमज़ोर करने के लिये उत्पादन को मानेसर स्थित उसके प्लांट में भेजने की कोशिश की. औपचारिक तौर पर हड़ताल के बाद ठेकेदारी प्रथा वहाँ समाप्त हो गयी लेकिन वहाँ की वर्तमान स्थिति की जानकारी का अभाव है.

नपीनो ऑटो, मानेसर 2010
नपीनो ऑटो हीरो मोटरसाइकिल्स और मारूति सुज़की को इलेक्ट्रौनिक कल-पुर्जे सप्लाई करता है. 2010 जून में, प्रबंधन द्वारा एक मज़दूर के प्रति बदसलूकी के मामले को लेकर 600 नियमित और अनियमित मजदूरों ने चार दिन तक प्लांट पर कब्ज़ा कर लिया. बाहर बचे 200 मजदूरों ने उनके लिए खाद्य सामग्री का इंतजाम किया. नतीजतन, तीन साल की अवधि में मजदूरी में 3500 रुपये की बढ़ोतरी हई. पर जल्दी ही कंपनी ने तैयारी की और एक असामयिक हड़ताल की वज़ह से मज़दूरों को लॉक-आउट करने में कामयाब हो गयी. कुछ मजदूरों की छंटनी हई, परन्तु जुलाई 2012 में उसी औद्योगिक क्षेत्र में मारूति सुज़की के मजदूरों की आक्रामकता के मद्देनज़र नपीनो प्रबंधन ने 'शांति बनाए रखने के लिए' इन मजदूरों को वापस ले लिया और 50 अनियमित मजदूरों को नियमित कर दिया.

मारूति सुज़की, मानेसर, 2011 से 2012 तक
जून 2012 में करीब 2000 अनियमित और परमानेंट मजदूरों ने 13 दिन के लिए फैक्ट्री पर कब्ज़ा कर लिया, जिन्हें बाहर बचे 1500 सहकर्मियों का सहयोग था. परमानेंट वर्करों की यूनियन बनाने की औपचारिक मांग पूरी नही हई, लेकिन कंपनी ने कई प्रकार की रियायतें दीं: मजदूरी में अच्छी बढ़ोतरी, माता-पिता के लिए स्वास्थ्य बीमा, काम की गति को 45 सेकण्ड में एक कार से घटा कर 1 मिनट कर दिया गया. अक्टूबर 2011 में मजदूरों ने फिर से फैक्ट्री पर कब्ज़ा कर लिया, जब प्रबंधन ने अनियमित मजदूरों को लॉक-आउट करने की कोशिश की और मजदूरों ने इस बार भी कंपनी की नीति को नाकामयाब कर दिया. तमाम रियायतों के बावजूद असंतोष कायम रहा; और 18 जुलाई 2012 को हज़ारों की संख्या में मजदूरों ने फैक्ट्री पर हमला बोल दिया, इमारतें जला दी गयीं, सौ से अधिक मैनेजर अस्पताल पहँच गए.

हम समझ सकते हैं कि 'अपनी' कंपनी के अंदर हमारी हर गतिविधि का असर दूसरी फैक्ट्रियों के मजदूरों पर पड़ता है. जब जुलाई 2013 में धरुहेरा/गुडगाँव में दो दिन के लिए काम रुका, संधर मैनेजमेंट को काम के घंटों को 12 से घटा कर 8 करना पड़ा क्योंकि मोटरसाईकिल के आइनों की ढेर लग गयी थी. इस स्थिति के विपरीत – संधर में हड़ताल का असर हीरो कंपनी पर पड़ेगा, इसलिए संधर के मजदूरों को हीरो में कार्यरत अपने सहकर्मियों से सीधा तालमेल स्थापित करना होगा. ये तालमेल कई बार अन्तर्राष्ट्रीय भी होंगे. 2009 में गुड़गांव में स्थित रीको की फैक्ट्री में लॉक-आउट की वजह से अमरीका में फोर्ड और जेनरल मोटर्स में असेम्बली लाइनों को रोकना पड़ा.

इस तरह के कई उदहारण हमारे सामने हैं, जिनसे हमें सीखना होगा:

*** कंपनी को आपके सामूहिक हस्तक्षेप के खिलाफ तैयारी करने का मौका नहीं दें. उस पर चोट तब करें जब आपके काम की ज़रूरत उसको सबसे ज्यादा हो.**
*** फैक्ट्री के अंदर रहें, पर आपके पास बाहरी सहयोग भी हो यह निश्चित कर लें.**
*** प्रतिनिधि अथवा नेता न भेजें, क्योंकि वे खरीदे या दबाये जा सकते हैं.**
*** संघर्ष और संगठन के निश्चित स्वरूप जो आपको अलग-अलग श्रेणियों में विभाजित करते हैं उन्हें स्वीकार न करें - उदाहरण के लिए, एक ही ट्रेड-यूनियन में नियमित मजदूर, अनियमित मजदूर और सप्लाई फैक्ट्रियों में कार्यरत मजदूर सदस्य नहीं हो सकते.**
*** इलाके के और उसके बाहर के मजदूरों को आपके गतिविधि की खबर हो यह ज़रूरी है, इससे आपके संघर्ष का असर व्यापक होता है और दबाव बढ़ता है.**

हम इस पर्चे का वितरण चेन्नई, पुणे और भारत में स्थित संधर फैक्ट्रियों के साथ-साथ पोलैंड और स्पेन में स्थित संधर प्लांटों में भी करेंगे. इससे स्थिति शायद नहीं बदलेगी लेकिन हम आशा करते हैं कि अलग-अलग फैक्ट्रियों के मजदूर एक दूसरे से सीधा संपर्क स्थापित करेंगे ताकि भविष्य में ज़रूरत पड़ने पर अपने बीच तालमेल कर सकें. अन्य मजदूरों से संपर्क करें और उन्हें बताएं अपनी स्थिति और सामूहिक क़दमों के बारे में.

संधर ऑटोमोटिव्स (भारत) के कुछ मजदूर
workers.at.sandhar@gmail.com